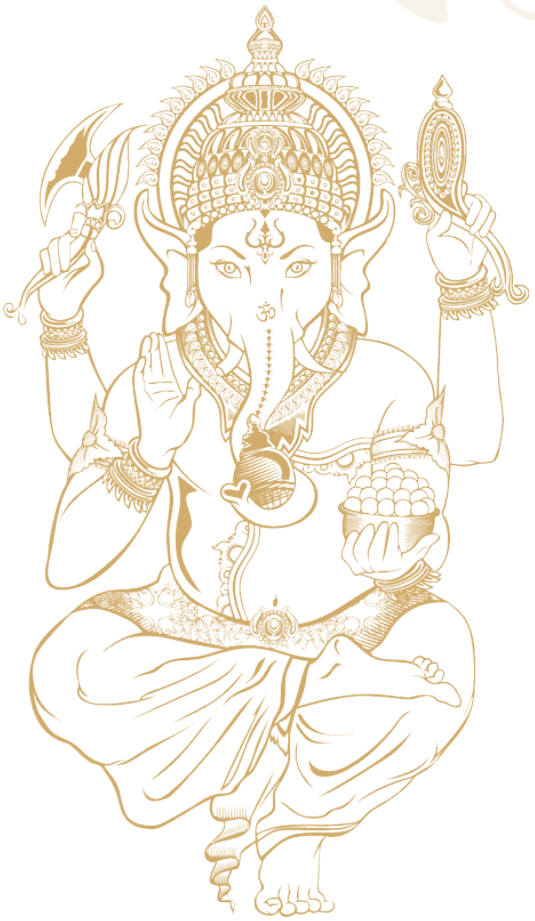

Yash Gunjan

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119776711

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/07/1998	जन्म तिथि	06/03/1997
मंगलवार	दिन	गुरुवार
घंटे 15:29:00	जन्म समय	21:25:00 घंटे
घटी 24:46:54	जन्म समय(घटी)	36:44:04 घटी
India	देश	India
Alwar	स्थान	Alwar
27:32:00 उत्तर	अक्षांश	27:32:00 उत्तर
76:35:00 पूर्व	रेखांश	76:35:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:40	स्थानिक संस्कार	-00:23:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:34:14	सूर्योदय	06:43:22
19:22:33	सूर्यास्त	18:26:57
23:50:03	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:04

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 7वर्ष 5मा 5दि		29:53:09	तुला	लग्न	तुला	02:29:12	चन्द्र 3वर्ष 6मा 27दि	
शुक्र		21:15:51	मिथु	सूर्य	कुंभ	22:18:09	गुरु	
11/12/2012		24:10:17	वृश्चि	चंद्र	मक	18:34:00	02/10/2025	
11/12/2032		06:52:11	मिथु	मंगल व	कन्या	06:56:30	02/10/2041	
शुक्र	12/04/2016	15:48:29	कर्क	बुध	कुंभ	17:50:35	गुरु	21/11/2027
सूर्य	12/04/2017	04:02:28	मीन	गुरु	मक	16:12:17	शनि	03/06/2030
चन्द्र	12/12/2018	21:30:46	वृष	शुक्र	कुंभ	15:32:33	बुध	08/09/2032
मंगल	11/02/2020	08:29:07	मेष	शनि	मीन	13:25:55	केतु	15/08/2033
राहु	11/02/2023	08:39:08	सिंह व	राहु व	कन्या	04:55:32	शुक्र	15/04/2036
गुरु	12/10/2025	08:39:08	कुंभ व	केतु व	मीन	04:55:32	सूर्य	01/02/2037
शनि	11/12/2028	17:57:11	मक व	हर्ष	मक	13:04:49	चन्द्र	03/06/2038
बुध	12/10/2031	07:22:31	मक व	नेप	मक	05:18:03	मंगल	10/05/2039
केतु	11/12/2032	11:52:15	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	11:47:01	राहु	02/10/2041

लग्न-चलित

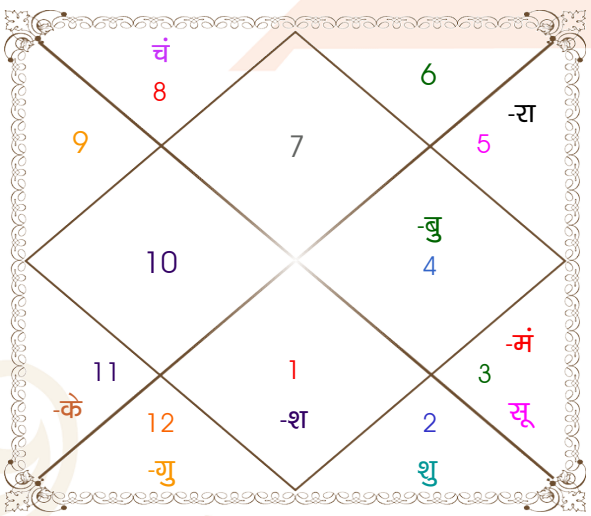

लग्न-चलित

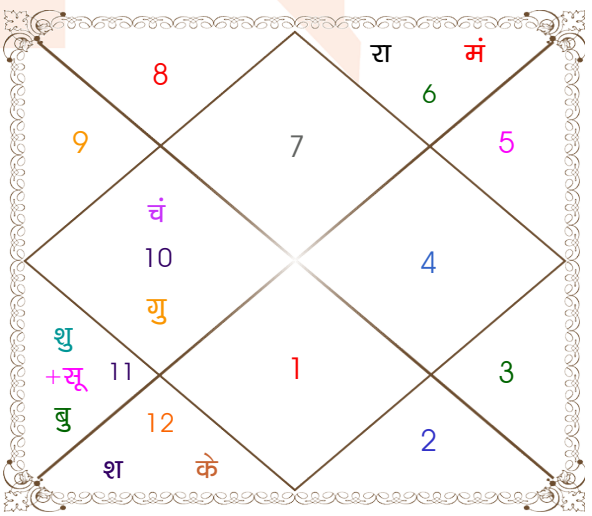

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शनि	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	22.00		

लैं का वर्ग मृग है तथा ळनदरंद का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार लैं और ळनदरंद का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

लैं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

ळनदरंद मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल ळनदरंद कि कुण्डली में द्वादश भाव में कन्या राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु ळनदरंद कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु लै कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

लै तथा ळनदरंद में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।